# बाल साहित्य के आईनेमें बाल सिनेमा जगत

**डॉ. शिल्पा दादाराव जिवरग**
**असोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)**
**पंडित जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय शिवाजीनगर, औरंगाबाद**

## प्रस्तावना

हिन्दी बाल साहित्य के विकास की गति पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि आधुनिकता की अवधारणा अपने विशिष्ट अर्थ में पिछले दो दशकों में खुलकर सामने आई। यों स्वतंत्रता के बाद जो बालसाहित्य लिखा गया, वह विषय और शैली की दृष्टि से अपने पूर्ववर्ती बाल साहित्य से भिन्न होने के कारण उस युग में आधुनिक था। हर युग का साहित्य अपने पूर्ववर्ती साहित्य से अलग रहता है। स्वतंत्रता के बाद लिखे जाने वाले बाल साहित्य में जो प्रवृत्तिया बीज रूप में थी, वही पिछले दो दशकों में पुष्पित- पल्लवित होकर लहलहा उठी। यद्यपि समूचे बाल साहित्य में उनका प्रतिपालन परिणाम की दृष्टि से संतोषजनक है। यह बाल साहित्य जीवनमुल्यों से संयुक्त, युगीन परिस्थितियों का ऐसा दस्तावेज़ है, जो आज के बालक के संसार, सपनों और अस्मिता का सतरंगी चित्र उकेरता है। यह समाज के हर वर्ग के बालक को अपना वर्ण्य- विषय बनाता है। आज के भौतिकतवादी समाज और उससे प्रसूत खतरो से जूझते बालक को पूरीसवेदना से चित्रित करता है। व्यक्ति फरक चेतना के दुष्परिणामों को भी कहानी-उपन्यास के माध्यम से सामने आता है। अंतराष्ट्रीय और राष्ट्रीय फलक पर आई परिवर्तन की लहर का आरोह- अवरोह भी इसमे विद्यमान है।

## बालक केन्द्रित सिनेमा

अगर विचार किया जाए कि, क्या सिनेमा बाल केंद्र में रख कर फिल्मो का निर्माण कर रहा है? तो उसका जवाब होगा 'हा' भी और 'नहीं' भी। सिनेमा प्रत्येक पीढ़ी के अनुसार मनोरंजन परोसता है। सिनेमा बाल मन से अछूता नहीं। माना सिनेमा का मुख्य उद्देश्य व्यावसायिकता है। बावजूद इसके बच्चों को केंद्र में रखते हुए भी सिनेमा निरंतर रचा जा रहा है।

बालक समाज की प्रथम इकाई है। यदि बालक के विकास पर ध्यान न दिया गया तो स्वस्थ समाज की कल्पना साकार न होगी। इसलिए बालको की हिफाजत और देखभाल माली की तरह करनी होगी। बाल साहित्य बालक के मानसिक और ज्ञानात्मक विकास में सहयोगी ही नहीं होता बल्कि बालक में उन अंकुशों का भी अंकुरण करता है। जो उसके संवेगात्मक विकास और जीवन सत्यों को पहचानने, यथार्थ के धरातल पर खड़े होने तथा जीवन पथ पर सहज रूप से बढ़ने में सहायक होता है। बाल साहित्य केवल बाह्य ज्ञान ही नहीं देता, अन्तर ज्ञान भी देता है।

सामाजिक विकास में बालक के महत्व का आकलन करते समय बाल साहित्य की उपयोगिता को भी प्राथमिकता देनी चाहिए।

बहुत से माता- पिता समय का अभाव होने के कारण बच्चों को उल्टे-सीधे साहित्य व दूरदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों में व्यस्त कर देते है। जिससे अनजाने में ही बच्चों में गलत आदते आ जाती है। यदि उन्हे अच्छा बाल साहित्य उपलब्ध कराया जाये तो शायद भटकने से बच जायेंगे।

हिंदी सिनेमा के इतिहास को टटोलते हुए 'बाल केन्द्रित फिल्मों' का अध्ययन करेंगे जिससे वह इस पहलू की पड़ताल करने में सक्षम हो सकें कि हिंदी सिनेमा अपने सौ वर्ष के जीवनकाल में बच्चों की समस्याओं को पर्दे पर उतारने में कितना सफल हो पाया है| 900 से 1000 फिल्में प्रतिवर्ष बनाने वाला हिंदी सिनेमा आज भी 'बाल सिनेमा' के क्षेत्र में इतना पिछड़ा क्यों है? 'बाल-सिनेमा' के इतिहास में चिल्ड्रेन ऑफ़ हैवेन जैसी एक भी फिल्म आज तक क्यों नहीं बन पायी? अधिकतर बाल-फिल्मों की कहानियां बच्चों को उपदेश देते हुए ही क्यों दिखाई पड़ती हैं? कार्टून तथा एनीमेशन फिल्मों ने क्या इस स्थिति में कोई सुधार किया है? निर्धारित फिल्मों द्वारा इन सभी प्रश्नों के जवाबों को गहराई से विवेचित करने का प्रयास किया जायेगा ताकि विद्यार्थी न केवल बाल सिनेमा के महत्त्व और उसकी प्रासंगकिता से परिचित हों बल्कि भविष्य में इस दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित भी हो सकें|

कोविड की ताजा लहर के साथ, बाहरी गतिविधिया चिंता का विषय बनी हुई हे, अधिकांश बच्चे अपना अधिकांश समय घर पीआर बिता रहे हे। क्या आपको नहीं लगता की हर बच्चे के लिए अच्छी फिल्मों का आनंद लेने और उनसे समय-समय पर सीखने का अच्छा समय होगा? ऐसी कई फिल्मे हे जो उनके लिए एक शैक्षिक मूल्य रखती है और बच्चों को जीवन के महत्वपूर्ण पाठ अधिक मजेदार तरीके से सीखा सकती है।

बच्चों के लिए फिल्म बनाने के संदर्भ मे भारत सरकार ने स्वतंत्रता के उपरांत ही पहल कि शुरुवात कर दी थी। सान १९५५ मे जवाहर लाल नेहरू जी ने सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने चिल्ड्रन फिल्म सोसायटी का गठन किया। जिसका उदेश्य बच्चों के लिए प्रेरक फिल्मों का निर्माण करने के साथ-साथ समाज मे जागरूकता पैदा करना हिए। इस संस्था ने बच्चों के लिए महत्वपूर्ण फिल्मों का निर्माण किया है। जिसमे चरणदास चोर, भारत दर्शन, बाजार, महक आदि प्रमुख है। हालांकि पिछले एक दशक से बच्चों पीआर आधारित कई फिल्मों ने दर्शकों कि विकलांगता हो,या कोई मनोवैज्ञानिक समस्या या स्कूल प्रशासनकी समस्या। भिन्न- भिन्न मुद्दों पर हिन्दी सिनेमा निरंतर फिल्म निर्माण मे लगा हुवा है।

**बाल केन्द्रित हिंदी सिनेमा में देखा जाए तो,** किताब- गुलज़ार, मासूम- शेखर कपूर, ब्लू अम्ब्रेला - विशाल भारद्वाज, तारे ज़मीन पर- आमिर खान, स्टेनली का डिब्बा - अमोल गुप्ते,

मकड़ी- विशाल भारव्दाज, गट्टु– राजन खोसा, आई एम कलाम- नीला माधब,चिल्लर पार्टी- विकास बहलौर निटेश तिवारी,इकबाल- नागेश कुकुनुर, साइना- अमोल गुप्ते, तहांन- संतोष सिवान, धूमकेतु- के गोपाल कृष्णन आदि।

## बाल सिनेमा और जीवन मूल्यों कि नीव

बच्चों के लिए उपयुक्त एक अच्छी फिल्म चुनना वास्तव में थकाऊ कम है। बाल केन्द्रित फिल्मों में न भूलने वाली सर्व प्रथम फिल्म 'जागृति' का नाम लिया जा सकता है। किशोरों के मन में अपने देश के लिए प्रेम, त्याग, बलिदान, मेहनत से कभी जी न चुराना जैसी अनमोल नसीहतों को इसमे पेश किया गया है। फिल्म गुरु- शिष्य के आत्मीय संबंध को बखूबी ढंग से पेश करती है। इस फिल्म का बेहद चर्चित गीत 'हम लाए है तूफान से कश्ती निकाल के इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के।' आज भी राष्ट्रीय पर्व 15 अगस्त एवं 26 जनवरी पर ये गाना दिल से सुना जाता है।

सिनेमा जगत में विख्यात राजकपुर जी ने बाल केन्द्रित फिल्मोंका निर्माण किया। जिसमे 'बूटपालिश' और 'अब दिल्ली दूर नहीं है।' प्रमुख है। 'बूटपालिश' फिल्म अनाथ-किशोर-किशोरियों को चोरी चाकरी तथा अपराध की दुनिया से दूर रहने की सीख देती है। इस फिल्म का गाना 'नन्हें- मुन्ने बच्चे तेरे मुट्ठी में क्या है?' बच्चो को सीख देता है कि भीख में गर मोति भी मिले तब भी नहीं लेना चाहिए। राजकुमार कि अगली फिल्म 'अब दिल्ली दूर नहीं' बच्चों को सीख देती है कि जीवन में निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। कभी हार नहीं माननी चाहिए।

अनाथ, बेसहारा बच्चों की बेबसी तथा इन परिस्थियों मे भी जीवन की जंग जारी रहती है।

https://youtu.be/79w3Hv9pxfk

## बालकों का मानसिक अंतर्व्दंव्द

राजश्री प्रोडक्शन कि फिल्म 'दोस्ती' ने परंपरागत धारणा को तोड़ा। इस फिल्म में दो दोस्तों कि कहानी है। दोनों ही विकलांग होते है लेकिन प्रकृति ने उन्हे उपहार में संगीत कि कला भेट कि है। ये दोनों दोस्त हाथ पकड़कर मुंबई कि सडकों पर अपनी कला का जलवा बिखेरते है।, जिसे देख दर्शक भावुक हो जाते है।

बात अगर बच्चों और सिनेमा की हो तब हम गुलजार साहब को भला कैसे भूल सकते है। बाल मनोविज्ञान का उन्हे गुरु कहा जा सकता है। 'किताब' गुलजार व्दारा लिखित और निर्देशित एक ड्रामा फिल्म है। बबला को बेहतर शिक्षा के लिए अपनी बहन के साथ रहने के लिए शहर भेजा जाता है। बबला और टिटू दोनों पक्के दोस्त बन जाते है। बच्चे जल्दी बड़े होना चाहते है ताकि पढ़ाई से पीछा छूटे हालाकी, जब बबला अपनी पढ़ाई में अरुचि दिखने के लिए डांटा जाता है, तो वह भागने का फैसला करता है। बाद में उसे समाज की सच्चाई और शिक्षा का

महत्व समझ मे आता है। बच्चे और बड़ोंके के विचारोंका अंतर इस फिल्म में चित्रित किया है। बच्चों का अंतव्दंव्द उनकी मानसिकता को खोकला बनती है सही समय में इस से बाहर निकालना बेहद जरूरी हो जाता है।

https://youtu.be/WrIMygw1syU

## कल्पनाओ की उड़ान

मुंशी प्रेमचन्द जी ने सच में हमारे हिंदी साहित्य को अपनी रचनाओं की एक अदभुत सौगात दी है 'ईदगाह' कहानी मे एक महत्वपूर्ण संदेश हमे यह मिलता है कि एक छोटे से बच्चे के अंदर कितना बड़ा दिल छिपा हुआ है,उस बच्चे को अपनी भूख के आगे अपनी बूढ़ी दादी का दर्द ज्यादा बड़ा लगता है भावुकता पूर्ण इस कहानी को देखते देखते मेरे तो आंसू ही नहीं रुकेएक कोमल बचपन की इतनी बड़ी महानता मैने यह कहानी स्कूल में पढ़ी थी,आज आप के चैनल के सहयोग से इसे देखने का अवसर मिला ,आप का अति धन्यवाद हिंदी साहित्य के अमूल्य रत्न मुंशी प्रेमचन्द जी को कोटि कोटि प्रणाम।

https://youtube.com/clip/Ugkx0l0A9SL3WYZ6998tPX-OEU49n2vynujk

' तारे जमीन पर' यह फिल्म अभिभावकों की अति महत्वकांक्षा के चलते विलुप्त होते बचपन की कहानी है। यह फिल्म ऐसे अभिभावको को एक डपटनुमा संदेश है। जो अपनी महत्वाकांदगओ की पूर्ति के लिए मासूमों से उनकी खुशिया उनके सपने छिन लेते है।

इस फिल्म के लिए आमिर खान के हौंसले की प्रशंसा की जानी चाहिए कि उन्होंने अपने निर्देशन में बनी पहली फिल्म 'तारे जमीन पर' एक बच्चे को केन्द्र में रखकर बनाई और बिना बॉक्स ऑफिस की चिंता किए पर्दे पर उतारा। इस फिल्म के जरिए उन्होंने बच्चों के भीतर झांकने की कोशिश की। फिल्म आठ साल के ईशान दर्शील सफारी की कहानी बताती है, जो मानसिक रूप से अपने परिवार के लिए पीड़ित होता है। जब उसे बोर्डिंग स्कूल भेज दिया जाता है तब, वहा ड्रॉइंग के अध्यापक रामशंकर निकुंभ उसके डिस्लेक्सिया डिसॉर्डर को पहचानते हैं। उसे उचित मार्गदर्शन से उसकी पढ़ाई-लिखाई में भी सुधार कराते है।

https://youtu.be/lP3X5uTv2yQ

## अधिकारों के लिए लड़ाई

चिल्लर पार्टी एक बच्चों के गैंग की कहानी है जो बहुत मासूम हैं। उन्हें कोई चिंता नहीं है और मस्त जिंदगी जीते हैं। चंदन नगर कॉलोनी में ये सब रहते हैं। जल्दी ही इनका गैंग में फटका और भीड़ू भी शामिल हो जाते हैं और इनकी दोस्ती अधिक मजबूत हो जाती है। बच्चों की टीम में तब समस्या उत्पन्न हो जाती है, जब भीड़ू की जिंदगी एक नेता की वजह से खतरे

में आ जाती है। ये घबराते नहीं हैं और मिलकर लड़ने का फैसला करते हैं। फिल्म ये साबित करती है कि छोटे बच्चे चाहें तो किसी को भी धूल चटा सकते हैं।

यह फिल्म पूरे भारत में हर बच्चे के लिए अब तक कि सबसे मनोरंजक फिल्म है। यह एक ऐसी फिल्म है जिसे पूरे परिवार के साथ देखा जा सकता है। फिल्म उन सभी छोटे बच्चोके बरे मे है जिन्हों ने अपने अधिकारोके लिए अपने उचित तरीकों से लड़ाई लड़ी। इस फिल्म के सर्वश्रेष्ठ पटकथा  के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार २०११ तथा सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म २०११ से सम्मानित किया गया है।

https://youtu.be/42UM1FIyUWc

## सहपाठी और संस्कृतिक विकास में सहायक

एक ऐसी ही दिल को छू लेने वाली फिल्म है 'स्टेनली का डिब्बा'। इस कहानी में एक पेटु शिक्षक है। जो सब बच्चों के टिफ़िन खा जाता है। स्टेनली, चुकी गरीब है। उसके माँ-बाप नहीं। वह अपने मुह बोले भाई के साथ रहता है। उसके भाई का एक ढाबा है। लेकिन वह कभी डिब्बा लेकर नहीं जाता। खदूस शिक्षक जब यह देखता है की, सभी बच्चे उसके बजाए स्टेनली को अपना लंच खिला रहे है। तब वह उसे सब बच्चों के सामने बुरी तरह डांटते हुए कहता है- 'डिब्बा नहीं, स्कूल नहीं'। स्टेनली के बालमन पर उस डांट का इतना गहरा असर होता है कि, वह स्कूल जाना छोड़ देता है।अंत में जब स्टेनली उस खडूस के लिए डिब्बा लेकर जाता है, तब वह कहता है कि, 'सर ये रहा आपका डिब्बा, क्या अब मै स्कूल आ सकता हू।' यह दृश दर्शकों को अत्यंत भौक कर देता है। इस अद्भुत कृति के माध्यम से स्कूल के समय को बहुत अच्छे से याद किया जा सकता है।

https://youtu.be/w1L7zdrweDg

## खेल-खेल में ज्ञानार्जन

'फरारी की सवारी' इस फिल्म को खेल के दृष्टिकोण से बनाया गया है। रूसी के बेटे कायो का सपना है कि वह एक दिन बड़ा क्रिकेट खिलाड़ी बनेगा। आरटीओ में क्लर्क होने के बावजूद रूसी के पास पैसे की तंगी हमेशा बनी रहती है। क्योंकि, वह ईमानदार रहता है। पैसे की तंगी के बीच जूझकर हताशा में वह कहता है कि हम जैसे लोगों को तो सपने नहीं देखने चाहिए। बेटे के सपने को पूरा करने की जद्दोजहद में वह न चाहते हुए भी गलत काम कर बैठता है, जिसके कारण कई परेशानियों से घिर जाता है।

https://youtu.be/Z73nY7yVV2E

'साइना' यह फिल्म पूर्व विश्व नंबर 1, भारत की इक्का-दुकका शटलर साइना नेहवाल के करियर के उतार-चढ़ाव का अनुसरण करती है। यह उन लोगो को भी श्रद्धांजली देता है जो उसके लचीलेपन और अटूट भावना में अत्यधिक योगदान देते है।

https://youtu.be/3oDQbY3is1s

## वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास

जीवन में विज्ञान का महत्व बढ़ जाने से वैज्ञानिक तथ्यो या उपकरणो के प्रति रागात्मक संबंध स्थापित हो गया है। इसका परिणाम यह हुआ कि जो विज्ञान नीरस लगता था, वह अपनी प्रक्रिया से ही संवेदना उत्पन्न करता था। संवेदना ही सिनेमा का आधार है। यदि वैज्ञानिक जानकारी सिनेमा के आधार पर दी जाएगी। तो वह चिर स्थायी होगी बल्कि सिनेमा के आस्वाद के लिए नये व्दार भी खुलेंगे तथा बालकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास भी होगा। बालकों के मानसिकता के परिवर्तन से अंधविश्वास को तोड़ने और सत्य को वास्तविकता में परखने कि प्रवृति विकसित होगी अतः वैज्ञानिक दृष्टिकोण आवश्यक है।

के गोपाल कृष्णन की फिल्म में शौकिया खगोलशास्त्री कैलाश डाटा धूमकेतुओ का अध्ययन करना पसंद कराते है। उनके जुनून को उनके बच्चे बिट्टू औरझुमकी साझा कराते है। कैलाश को पृथ्वी से टकराने के रास्ते पर एक धूमकेतु का पता चलने के बाद, यह दुनिया की सरकारों के लिए खतरे की घंटी बजाता है। जबकि उनकी पत्नी ,एक अंधविश्वासी महिला, तीर्थयात्रा के माध्यम से आपदा का मुक़ाबला करने की कोशिश करती है। जब एक पड़ोसी गिरोह केलाश के शोध को विफल करने में एक बुरी दिलचस्पी लेता है। की वे उनके प्रयासों को विफल करे और अपने पिता को अपने पिता को अपना कम करने में मदद करके दुनिया को बचाए। लेकिन क्या दो छोटे बच्चे एक शक्तिशाली गिरोह के लिए मेल खाते है।

## निष्कर्ष

ये तो जग जाहीर है, सिनेमा हमारा मनोरंजन करने के साथ साथ हमे सामयिक मुद्दों से भी अवगत करता है। बच्चों में सिनेमा को लेकर अलग उत्साह रहता है। कई बार जो कुछ सिनेमा में दिखाया जाता है, वे उसका अंधानुकरण करने लगते है। उनमे इतनी समझ नहीं होती कि वे असल और नकल में फर्क कर सके। यह सत्य है,सिनेमा हमे समाज कि सच्चाई से रू-ब-रू अवश्य कराता है। परंतु यह उन सच्चाईयों का महज नाट्य सच्ची शिक्षा वही है जो बच्चों में मानवीयत,संवेदनाओ को दृढ़ता से स्थापित कर दे। उसे यह सिखाए की जीवन के संघर्ष में सत्य व्दारा घृणा पर और अहिंसा व्दारा हिंसा पर विजय किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है।

असलम परवेज के अनुसार- बाल साहित्य का लक्ष्य है की बच्चों की समस्याओ को ध्यान में रखते हुये उनके ज्ञान, विवेक एवं आत्मविश्वास बढ़ाए एवं मानसिक विकास और चरित्र निर्माण

में मदद करे क्योंकि  यह मनुष्य समाज का भविष्य इसकी उपेक्षा करना उचित नहीं हे बाल्यावस्था जीवन के भवन की आधारशिला हे और साहित्य उस भवन की भव्यता का संरक्षक। आधार मजबूत होना जरूरी है। अतः स्पष्ट है की बालको के विचार, भावना, सवेदना का पोषक बाल साहित्य ही होता है। यह कार्य सिनेमा ने करनेका प्रयास किया है।

आज के इस विकसनशील वैज्ञानिक युग में बच्चों का, आधुनिक परिवेश इतना व्यापक तथा विविधताओ से भर है की माता-पिता, अध्यापक तथा पाठ्य-पुस्तके उनकी समस्त जिज्ञासाओ का समाधान नहीं कर पाती। बालक के क्यों? कैसे? और क्या? जैसे प्रश्नो का दायरा बढ़ता जा रहा है। श्रेष्ठ विज्ञान  कथाये नवीन पारिस्थितियों और परिवेश से बाल पाठक के संपर्क कौशल्य को बढ़ती है।

सत्य है कि यदि समाज के बच्चों को सही दिशा प्रदान करके,जीवन के नैतिक मूल्यों कि पहचान कराये उनमे सद्‌गुणों का संचार करें, सुसंस्कृत बनाने का प्रयास करें तो आने वाले समय में बच्चे, युवा, किशोर सभी सद्‌गुण, वैभवशाली हो जाएंगे और समाज आदर्श एवं उन्नत समाज बन जाएंगा क्योंकि आज का बालक वर्ग ही आने वाले समय में किशोर, युवा, प्रौढ़ फिर वृद्‌ध बनेगा। अतः बालकों के मानसिक विकास में साहित्य का योगदान अतुलनीय है।

मध्यम वर्ग का बालक माता-पिता कि महत्वकांक्षाओ को पूर्ण करने में लगा है। वही निम्न वर्ग का बालक अभावों का गरल पीने के लिए अभिशप्त है। अर्थात आज समूचा बचपन संकटग्रस्त है। आज आवश्यकता है बचपन को बचाने कि उसको स्वतंत्र व आनंदित रखने कि। हर बालक का अपना-अपना स्वप्निल संसार होता है उसके अपने मनोरथ, अपने सरोकार होते है, जिन्हे समझना जरूरी है।

## संदर्भ


- सिनेमा में बच्चे- अमिता- दिल्ली विश्वविद्‌यालय, ajitfoundation.in/hi/article
- हिन्दी बाल साहिय में बाल मनोविज्ञान- श्रीमती कीर्ति खांडवे देवी अहिल्याबाई विश्वविद्‌यालय, इंदौर शोध प्रबंध २०१६
- साक्षात्कार –डॉ॰ विकास दवे, साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश, मासिक प्रकाशन नवंबर-दिसंबर २०२०